शोध मंथन Vol. XVII No.1 Jan.- Mar. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.02

मध्यकालीन हरियाणा के भक्त संत

प्राप्तिः 10.01.26
स्वीकृतः 02.03.26

02

डॉ. मन्जू देवी
एसोसिएट प्रोफेसर, (इतिहास विभाग)
सी.एम.के. नेशनल पी.जी. महाविद्यालय, सिरसा
ईमेलः *dr.md158@gmail.com*

सारांश

हरियाणा ऋषि मुनियों, पीरों–फकीरों एवं संत महात्माओं की पुण्य भूमि कहलाती है। अधिकतर विद्वानों ने इस भूमि को साहित्य, दर्शन और संस्कृति के विकास की भूमि स्वीकार किया है। अधिकांश वैदिक साहित्य (संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों) की रचना इसी धरती पर सरस्वती नदी के तट पर हुई है। मध्यकाल में गुरु नानक, कबीर जंभेश्वर, चरणदास, दादू, घिसा आदि संतों ने हरियाणा के संतों को नई दिशा दी। इन्हीं संतो के प्रभाव से हरियाणा में संत परंपरा का विकास, पंथों एवं संप्रदायों के रूप में हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यकालीन हरियाणा के उन संतों का ऐतिहासिक क्रम से दर्शाने की कोशिश की गई है जिन्हें हरियाणा की भूमि में पैदा होने का गौरव प्राप्त है अथवा जिन्होंने इस पुण्य भूमि को अपना कर्म क्षेत्र बनाया।

मुख्य बिन्दु

उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, पुराण, बौद्ध, जैन, वैष्णव, शैव, नाथ, सूफी, जुगतानंद, निश्चलदास, गुलाबसिंह, डेढराज, जीतादास, घीसादास, नितानंद, वीरभान, गरीबदास, जैतराम।

प्रस्तावना

मध्यकालीन हरियाणा के साहित्य एवं संस्कृति की बात की जाए तो हरियाणा प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति का केंद्रीय स्थल रहा है। यहां की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परंपराएं अत्यंत प्राचीन, समृद्ध एवं गौरवपूर्ण रही है। यहां वेदों की रचनाओं का गायन हुआ तथा उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों, पुराणों, स्मृतियों की रचना हुई। महाभारत महाकाव्य लिखा गया तथा श्रीमद् भागवत गीता का अमर संदेश यही से प्रसारित हुआ। बौद्धों, जैनों, वैष्णवों, शैवों, शावतों, नाथों, सूफियों आदि ने समय–समय पर यहां की सांस्कृतिक परंपरा को समृद्ध किया है। 7वी–8वीं सदी से 16वीं सदी तक हरियाणा में जो मूर्तियां प्राप्त हुई है उनसे भी इस बात की पुष्टि हुई है कि शैव, वैष्णव, जैन एवं बौद्ध

मत का यहां काफी प्रभाव था।[1] विविध संप्रदायों के संतों ने अपनी वाणी के माध्यम से यहां के लोगों को धर्म, परायणता एवं नैतिकता से जीवन जीने की प्रेरणा दी।

कृष्ण की जन्म भूमि ब्रज भी हरियाणा से सटी हुई है और कृष्ण भक्ति धारा के सर्वश्रेष्ठ संत सूरदास भी हरियाणा के एक गांव में पैदा हुए थे। सामान्यतः हरियाणा में इन संतों का प्रचार–प्रसार 17वीं–18 वीं सदी के मध्य में हुआ और इनमें से अधिकांश ने पूर्व प्रतिष्ठित संतो कबीर, दादू, परमानंद, चरणदास आदि की परंपरा को आगे बढ़ाया। इस काल में यहां पर गरीबदासी, दादूपंथी, कबीरपंथी, नितानंदी, घीसापंथी, परमानंदी, चरणदासी, साध–संप्रदाय, सतनामी, राधा स्वामी आदि से संबंधित अनेक संतों व उनकी कृतियों का उल्लेख प्राप्त होता है। इन संतों ने रोहतक, हिसार, जींद, सिरसा, नारनौल, रेवाड़ी, अंबाला, कुरुक्षेत्र आदि क्षेत्र में अपने संप्रदायों की स्थापना की और धर्म का प्रचार किया।[2]

इनमें से कुछ प्रमुख संतों व मतों का उल्लेख इस प्रकार है–

वीरभान

हरियाणा में मध्यकाल के सर्वप्रथम भक्ति संत नारनौल के बिजेसर गांव में उत्पन्न संत वीरभान है। इनका जन्म 1543 ई० में हुआ था।[3] यह संत दादू दयाल के समकालीन तथा संत रविदास के परंपरा में संत उधोदास के शिष्य हुए हैं। वीरभान ने साध या सतनामी पंत की स्थापना की। इस पंथ में जाति–पति का कोई बंधन नहीं है। सभी लोग समान रूप से खा–पी सकते हैं और विवाह भी कर सकते हैं। सतनामी पंथ का नाम भारत के राजनीतिक इतिहास में भी स्मरणीय है। सतनामियों ने 1672ई० में औरंगजेब के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह भी किया था। इस संघर्ष में 2000 सतनामी वीरगति को प्राप्त हुए जिससे यह पंथ बहुत कमजोर हो गया था।[4] इतिहासकार खफी खाँ ने उनके बारे में बताया है कि यह भक्त की वेशभूषा में रहते हैं किंतु कृषि और व्यापार कार्य करते हैं। यह सात्विक रूप से धन प्राप्ति के पक्ष में है। यदि कोई अन्याय और अत्याचार करता है तो यह उसे सहन नहीं कर सकते। इनमें से बहुत से शास्त्र भी धारण करते हैं। ये मुंडिया भी कहलाते हैं क्योंकि ये अपना सिर मुंडवा कर रखते हैं।[5]

गरीबदास

हरियाणा की संत परंपरा में गरीबदास का नाम सर्वोपरि है। इनका जन्म 1717 ई० में हरियाणा में जिला रोहतक के अंतर्गत छुड़ानी गांव में जाट घराने में हुआ था।[6] वे एक सामान्य गरीब किसान परिवार से संबंधित थे। वे अनपढ़ थे तथा गऊएं चराते थे। वे कबीर दास जी के बहुत बड़े भक्त थे। इन्हें संन्यास की अपेक्षा गृहस्थ जीवन प्रिय था। इसीलिए यह आजीवन गृहस्थ रहे। इन्होंने अपने ही नाम पर गरीब दासी पंथ चलाया। इन्होंने दिगंबर बोध नामक एक वृहद ग्रंथ की रचना की जिसमें पदों की संख्या लगभग 17000 है जो निर्गुण दर्शन की अमूल्य विधि है। इनके द्वारा स्थापित पंथ की शाखाएं पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान के विभिन्न भागों में स्थापित हो चुकी है। उन्होंने विदेश व घृणा का विरोध किया तथा विभिन्न संप्रदायों, धर्मों, जातियों व वर्गों में व्याप्त भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया। कबीर की तरह उन में हिंदू व मुस्लिम दोनों धर्म के तत्व मौजूद थे। इसलिए उनके शिष्यों में दोनों धर्म के लोग शामिल थे।[7] गरीबदास के जीवनी लेखक डॉ० के० गुप्ता ने उन्हें

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.02

मानवता का संत बताते हुए कहा है कि ''संत गरीबदास एक सच्चे संत थे क्योंकि उन्होंने कभी किसी राज्य दरबार का संरक्षण नहीं चाहा। उनके जीवन काल में बहुत सी राजनीतिक उतार चढ़ाव वाली घटनाएं हरियाणा के रणक्षेत्र में घटी पर उन्होंने किसी भी पद में इनका जिक्र नहीं किया। हिंदू परिवार में उत्पत्ति के बावजूद उनके पदों ने सभी संप्रदायों, जातियों, वर्गों को एकता के सूत्र में बांधा।[8] गरीब दास जी के शिष्यों में उनके पुत्र संत जैतराम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके अलावा उनके 20 प्रमुख शिष्य बताए गए हैं तथा आज भी छुड़ानी गांव में उनकी शिष्य परंपरा विद्यमान है।[9]

जैतराम

जैतराम का जन्म हरियाणा के रोहतक जिले के छुड़ानी गांव में 1737 ई० में हुआ था। यह सुप्रसिद्ध संत गरीबदास जी के पुत्र एवं शिष्य थे। उनकी माता का नाम मोहिनी था तथा वे चार भाइयों में दो बहनों में सबसे बड़े थे। उनका अधिकांश समय है गांव करौंया जिला रोहतक में व्यतीत हुआ। वे बचपन से ही साधु स्वभाव के थे। इसलिए अपने पिताजी से दीक्षा लेकर उनके शिष्य बन गए। उन्होंने अपने गुरु का स्वयं ही वर्णन दिया है–

''मैं हूं चरण कमल का चेरा, गरीब दास सतगुरु मेरा।।
बिन करतब जग तप बिन पाया। सहज सुभाय दमाकर आया।[10]

संत जैतराम ने अपना शरीर पंजाब प्रांत के जालंधर जिला महतपुर नामक गांव में अपनी श्रेष्ठता से त्यागा। वहां पर उनकी दिव्य समाधि बनी हुई है। करौंया (रोहतक) में भी इनकी भव्य छतरी बनी हुई है। जैतराम जी की वाणी ग्रंथ साहिब नामक वृहद ग्रंथ में संग्रहित है। इसमें लगभग 12000 पद हैं। संत जैतराम परम साधक, सिद्ध महात्मा और सर्वस्व त्यागी थे। उनकी वाणी में जात–पात और सांप्रदायिक भेदभाव का कड़ा विरोध देखने को मिलता है–

''एक राम अल्लाह कहते, कोई नमाज कोई पूजा।
कोई माला कोई तस्वी फेरे, इनमें भेद न दूजा।।''[11]

नितानंद

नितानंद जी का जन्म हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के नारनौल नामक नगर में 1723 में हुआ था।[12] इनका बचपन का नाम नंदलाल था। इनके पूर्वज भरतपुर विरासत में उच्च पदों पर कार्य करते थे। वे स्वयं भी भरतपुर रियासत में तहसीलदार के पद पर कार्य करते थे। इनका अधिकांश समय दुबलधन, माजरा, बास, सुबाना और महमूदपुर के चार गांवों के सरोवरों पर बीता। इनके गुरु का नाम गुमानीदास था जिसकी पुष्टि उन्होंने स्वयं एक साखी में की है–

''टेढ़े टेढ़े चालते, टेढ़ी धरते पाग।
गुरु गुमानी दास जी, दिया ज्ञान बेराग।''[13]

संत नितानंद का पंथ नितानंद पंथ कहलाता है जिसकी प्रमुख गद्दी दुबलधन माजरा में है। इस पंथ की शिष्य परंपरा को भेष प्रणाली कहा जाता है। भेष प्रणाली के अनुसार उनके शिष्य परंपरा में गुमानीदास, नितानंद, ध्यानदास, विचित्रदास, बिशनदास, गोकुलदास, दानिदास, भोलादास आदि आठ शिष्यों का उल्लेख प्राप्त होता है। संत नितानंद की संपूर्ण वाणी 'सत्यसिद्धांत प्रकाश' में

संग्रहित है और इसमें पदों की कुल संख्या 4584 है।[14] संत नितानंद महान संत तथा समाज सुधारक थे। उन्होंने जीवन और जगत की अनेक समस्याओं का वर्णन अपने पदों में किया है।

जुगताानंद

जुगतानंद जी का जन्म 1725 ई० में मेवात जिले के सता नामक गांव में हुआ था।[15] बचपन से ही भजन कीर्तन एवं साधु संगति में इनकी विशेष रूचि थी। माता–पिता के देहांत के पश्चात हुए ज्ञान की खोज में इधर–उधर भटकते रहे किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। यह चरणदास के प्रसिद्ध शिष्यों में से एक थे। डॉ० सूरजभान के अनुसार गोसाई जुगतानंद की वाणी अब तक प्रकाशित नहीं हुई है। यह हस्तलिखित ग्रंथ रोहतक स्थित चरणदासी संप्रदाय के महंत दुर्गादास के यहां पर है। इस ग्रंथ के अंत में 56948 संख्या अंकित है।[16]

गुलाब सिंह

हरियाणा के वेदान्तवादी संतों में गुलाब सिंह का अहम स्थान है। यह निर्मला संप्रदाय के थे जिसका केंद्र स्थान कुरुक्षेत्र था। गुलाब सिंह का जन्म संभवतः 1732 ई० में संखनगर नामक स्थान पर हुआ था।[17] खोज रिपोर्टों में उनके पिता का नाम गौरी राय और गुरु का नाम मानसिंह बताया गया है। गुलाब सिंह युवावस्था में ही विवाह से पूर्व वैराग्य से प्रेरित होकर घर से निकल पड़े और कुरुक्षेत्र के सन्निहित सरोवर पर संत मानसिंह की शरण में पहुंचकर इनसे दीक्षा ग्रहण की। लेकिन उनके माता–पिता उन्हें ढूंढते हुए कुरुक्षेत्र आ पहुँचे और संत मानसिंह से उन्हें वापस भेजने की प्रार्थना करने लगे परंतु स्वयं गुलाब सिंह ने संत भाव छोड़ने से मना कर दिया। कुरुक्षेत्र में रहकर संत गुलाब सिंह ने कई ग्रंथों की रचना की तथा अपने माता–पिता एवं गुरु का नामोल्लेख कई स्थानों पर किया है। संत गुलाब सिंह द्वारा रचित ग्रंथों में से चार ग्रंथ प्राप्त है– अध्यात्म रामायण, भाव रसामृत, मौखापंथ प्रकाश तथा प्रबोध चंद्र नाटक।[18]

संत डेढ़राज

हरियाणा के सुप्रसिद्ध नगर नारनौल के घारूस नामक गांव में 1771 ई० में संत डेढ़राज का जन्म हुआ जो नांगी संप्रदाय के महत्वपूर्ण संत थे। इनके पिता का नाम पूर्णदास था जो ब्राह्मण जाति के थे। उन्होंने 1793 ई० के आसपास अपने मत का प्रचार किया। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने उनके द्वारा लिखित तीन ग्रंथों का उल्लेख किया है लेकिन वह ग्रंथ आजकल उपलब्ध नहीं है।[19]

घीसादास

संत घीसादास का जन्म 1703 ई० में दिल्ली के निकट खेकड़ा ग्राम में हुआ। वे जाति के जुलाहा थे। घीसासंत शरण सतगुरु की रेणा बुजने भाई।[20] घीसादास कबीर पंथी थे परंतु ये इतने लोकप्रिय हुए की इन्हीं के नाम से घीसापंथ एक नया संप्रदाय चल पड़ा। घीसादास के शिष्यों में जीतादास और नेकीदास प्रसिद्ध हैं। इन्होंने समाज में व्यक्ति प्रथा का कड़ा विरोध किया और निर्गुण भक्ति का प्रसार करके सभी धर्मो, संप्रदायों तथा संतों का समान आदर करने का आह्वान किया।

जीतादास

जीतादास घीसापंथ के प्रवर्तक थे और घीसादास के शिष्य थे। यह जाट जाति के थे तथा खेकड़ा ग्राम के प्रसिद्ध नंबरदार थे। इनके माता–पिता की ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं होती। वे

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.02

अनपढ़ थे, जैसा कि उनकी वाणी से ज्ञात होता हैं 'जीता पढ़ा न अक्षर सीखा'। इन्होंने 1777 साखियों की रचना की जो बाद में घीसापंथ के शिष्यों ने प्रकाशित की।[21]

निश्चलदास

निश्चलदास दादू पंथी निर्गुण भक्ति धारा के एक महान संत थे। इनका जन्म हिसार जिले के हाँसी तहसील के कुंगड़गढ़ गांव में 1791 ई० में हुआ था।[22] वे जाट जाति से थे लेकिन उन्होंने ब्राह्मण बनकर काशी में संस्कृत की शिक्षा ग्रहण की। अपने जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने सोनीपत के किड़होली गांव में निवास किया। वे हिंदी और संस्कृत दोनों के प्रखंड विद्वान थे। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें विचार सागर, वृति प्रभाकर युक्ति प्रकाश, भाषा–आयुर्वेद, वृतिदीपिका आदि प्रसिद्ध हैं। विचार सागर की रचना किड़होली नामक ग्राम में हुई जिसका उल्लेख स्वयं उन्होंने दिया है–

''दिल्ली में पश्चिम दिशा कोस अठारह गाम।
तामें वह पूरो भयौ, किड़हौली तिहि नाम।।''[23]

स्वामी विवेकानंद जी विचार–सागर से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने इसे विगत तीन शताब्दियों का भारत का सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रंथ कहा है। इस पुस्तक की मौलिकता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि इसका अनुवाद मराठी, अंग्रेजी एवं बंगाली में भी हो चुका है। 1863 ई० में की मृत्यु हो गई।[24]

निष्कर्ष

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि मध्यकालीन हरियाणा के लोगों के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक उत्थान में भक्त संतों की निर्णायक भूमिका रही है। संतों के उपदेशों ने हरियाणा के लोगों को कर्मकांडों, अंधविश्वासों एवं जादू–टोनों से दूर रखा। अंधविश्वास से दूर होने के कारण ही 19वीं सदी में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में यह स्वीकार किया है कि हरियाणा के लोग कर्मकांड रहित हैं, जैसा कि किसी भी आधुनिक व्यक्ति को होना चाहिए। भक्त संतों ने सामाजिक बुराइयों जैसे जाति–प्रथा, मूर्ति–पूजा आदि का विरोध करके समाज को विकास के मार्ग पर अग्रसर किया। लोग मूर्ति पूजा व मंदिर निर्माण की बजाय सत्संग की परंपरा में ढ़ले तथा वर्तमान में भी इसी तरह की परंपरा का प्रचलन इस भूमि पर है। हरियाणा के अधिकतर भक्ति संतों का प्रभाव स्थानीय रहा, परंतु इनमें से कुछ संतो जैसे गरीबदास, जैतदास, निश्चलदास आदि संतों की वाणी हरियाणा से बाहर भी प्रचारित हुई। संतो द्वारा रचित पदों ने हरियाणा के साहित्य को भी समृद्ध करने में मुख्य योगदान दिया।

संदर्भ

1. डॉ० रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ0सं0 393
2. डॉ० ईश्वरी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया, पृ0सं0 626
3. उपरोक्त, पृ0सं0 625–627
4. जैतराम, ग्रंथ साहिब (जैतराम की वाणी), पृ0सं0 35

5. बुद्ध प्रकाश, हरियाणा का इतिहास, एक सर्वेक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1989, पृ0सं0 7
6. उपरोक्त, पृ0सं0 08
7. एच०ए० फड़के, हरियाणा, एन्सीयन्ट एण्ड मैडिवल, दिल्ली, 1990, पृ0सं0 215–216
8. के०सी० गुप्ता, श्री गरीबदास हरियाणा संत ऑफ ह्यूम्निटी, आदित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976, पृ0सं0 182
9. डॉ० रामपत यादव, हरियाणा का भक्ति साहित्य, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, 2006, पृ0सं0 59
10. जैतराम, ग्रंथ साहिब, पृ0सं0 34
11. उपरोक्त, पृ0सं0 389
12. डॉ० सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ0सं0 113
13. नित्यानंद, सत्य सिद्धान्त प्रकाश, पृ0सं0 3
14. उपरोक्त, पृ0सं0 26
15. हरियाणा का संत साहित्य, पूर्वोक्त, पृ0सं0 125
16. उपरोक्त, पृ0सं0 125
17. शिव प्रसाद गोयल, हरियाणा का हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, नटराज पब्लि० हाऊस, दिल्ली, 1984, पृ0सं0 41
18. हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, नागरी प्रचारिणी सभा, प्रथम खण्ड, पृ0सं0 247
19. हरियाणा का भक्ति साहित्य, पूर्वोक्त, पृ0सं0 61
20. रघुबीर सिंह मथाना एवं बाबूराम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन, रोहतक, 2004, पृ0सं0 240–241
21. एच०ए० फड़के, हरियाणा, एन्सीयन्ट एण्ड मैडिवल, दिल्ली, 1990, पृ0सं0 216
22. निश्चलदास, विचारसागर, पृ0सं0 327
23. हरियाणा, एन्सीयन्ट एण्ड मैडिवल, पूर्वोक्त, पृ0सं0 216